Ques. प्रभावशाली माँग के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या करें। विकासशील देशों के लिए यह सिद्धान्त कहाँ तक प्रासंगिक है?
अथवा,
Keynes के आय एवं रोजगार सिद्धान्त की व्याख्या करें।

Ans. 20वीं शताब्दी के सबसे महान अर्थशास्त्री और Newsman के अनुसार शायद सभी युगों के सबसे महान अर्थशास्त्री Prof. John maynard Keynes ने अपनी युग प्रवर्तक पुस्तक The General Theory of Employment Interest and money में 1936 ई० में प्रभावशाली माँग के सिद्धान्त का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस पुस्तक को संक्षेप में General Theory के नाम से भी जानते हैं। उनकी प्रभावशाली माँग के आधार पर आय उत्पादन तथा रोजगार की व्याख्या इतना मौलिक एवं क्रांतिकारी है कि Hawkins ने इसे New Economics की संज्ञा दी है और क्लेन (Klein) ने Keynesian Revolution की संज्ञा दी है। उनका General Theory अर्थशास्त्री के विद्यार्थियों के लिए उतना ही अपरिहार्य है, जितना की इसाई के लिए बाइबिल, मुसलमान के लिए कुरान और हिन्दू के लिए गीता और रामायण है। General Theory की तुलना आर्थिक विचार के Wealth of Nations, कार्ल मार्क्स के Das Kapital से की जाती है।

जहाँ शास्त्रीय विचारधारा के अर्थशास्त्री ने आय रोजगार मुद्रा के मूल्य आदि के निर्धारण के अलग-अलग सिद्धान्त प्रस्तुत किये गये थे, वहीं Keynes ने इन सबों का एक साथ समन्वित करके अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया। इसलिए Keynes के

विश्लेषण को General Theory या सिद्धान्त के नाम से जानते हैं। Keynes ने उ... रोजगार एवं उत्पादन का विश्लेषण प्रभावशाली माँग के धारणा के आधार पर किया है। उनका स्पष्ट कथन था कि Income depends upon effective Demand. यदि रोजगार में कमी आती है या उत्पादन का स्तर गिरता है या बेरोजगारी बढ़ती है तो इसका कारण प्रभावशाली माँग में कमी होना है। यही कारण है कि Keynes के सिद्धान्त को Demand Deficiency Theory कहा जाता है।

Keynes ने किसी श्रेष्ठ विकल्प के अभाव में आय एवं उत्पादन स्तर को रोजगार के द्वारा मापा है। अर्थात् अधिक रोजगार का अर्थ होता है, अधिक उत्पादन अर्थात् कुल आय में अधिक वृद्धि। इसका उल्टा भी सत्य होता है। इस तरह, Keynes के अनुसार जिन तत्वों के द्वारा कुल रोजगार का स्तर निर्धारित होता है वे ही तत्व कुल आय निर्धारित करते हैं अर्थात् इन तीनों को एक-दूसरे के बदले लिया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, कुल रोजगार की मात्रा कुल उत्पादन की मात्रा = कुल राष्ट्रीय आय की मात्रा। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि Keynes ने आय उत्पादन एवं रोजगार के विश्लेषण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से किया है। किसी एक व्यक्ति या फर्म के दृष्टिकोण से नहीं। इसलिए इनके सिद्धान्त को आय अथवा रोजगार का समग्र सिद्धान्त भी कहा जाता है। इसलिए इसे Macro Analysis या समष्टि विश्लेषण भी कहा जाता है।

Keynes के आय विश्लेषण के दो पक्ष हैं-

(i) समग्र पूर्ति फलन (Aggregate supply function) or, (A.S.F)

(ii) समग्र माँग फलन (Aggregate demand function)

जिस तरह Marshall के विश्लेषण में मूल्य निर्धारण के दो पक्ष मॉग वक्र और पूर्ति वक्र होते हैं, ठीक उसी तरह Keynes के विश्लेषण के दो पक्ष A.F.S और A.D.F होते हैं जिस तरह Marshall के मूल्य का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है जहां मॉग पक्ष और पूर्ति पक्ष में पारस्परिक अन्तर क्रिया होती है, ठीक उसी तरह से Keynes के विश्लेषण में प्रभावशाली मॉग का निर्धारण उस बिन्दु पर होता है, जहाँ A.S.F और A.D.F के बीच अन्तर क्रिया होती है।

समग्र पूर्तिफलन मुद्रा की विभिन्न मॉग की वह तालिका है। जितनी वस्तु के विक्रय से उसे अवश्य प्राप्त होनी चाहिए।

Aggregate Supply Function is a ~~Sched-ule~~ Schedule of the various amounts of money with the enterpreneurs in an economy must receive from the sale ~~off~~ of out-put at all varying levels of Employment.

इसी तरह, A.D.F जहाँ किसी भी अर्थव्यवस्था में साहसी के Receipts या वस्तु के विक्रय से प्रत्याशित आय की मात्रा को बताता है। A.S.F वस्तु के उत्पादन में लागत व्यय को बताता है। जब तक A.D.F, A.S.F से अधिक होता है। प्रत्याशित आय लागत व्यय से अधिक होता है। फलस्वरूप रोजगार, उत्पादन एवं आय की मात्रा बढ़ती है। लेकिन जब A.S.F, A.D.F से अधिक हो जाता है, तो लागत व्यय प्रत्याशित आय से अधिक होने के कारण उत्पादक को हानि होती है और वह उत्पादन करना बन्द कर देता है। जिस बिन्दु पर A.D.F और A.S.F दोनों बराबर होता है

यही प्रभावशाली माँग की बिन्दु होती है
और यहीं से रोजगार उत्पादन और
आय की मात्रा निर्धारित होती है।
यह निम्नलिखित रेखाचित्र से स्पष्ट है:—

प्रत्याशा
दुबारा

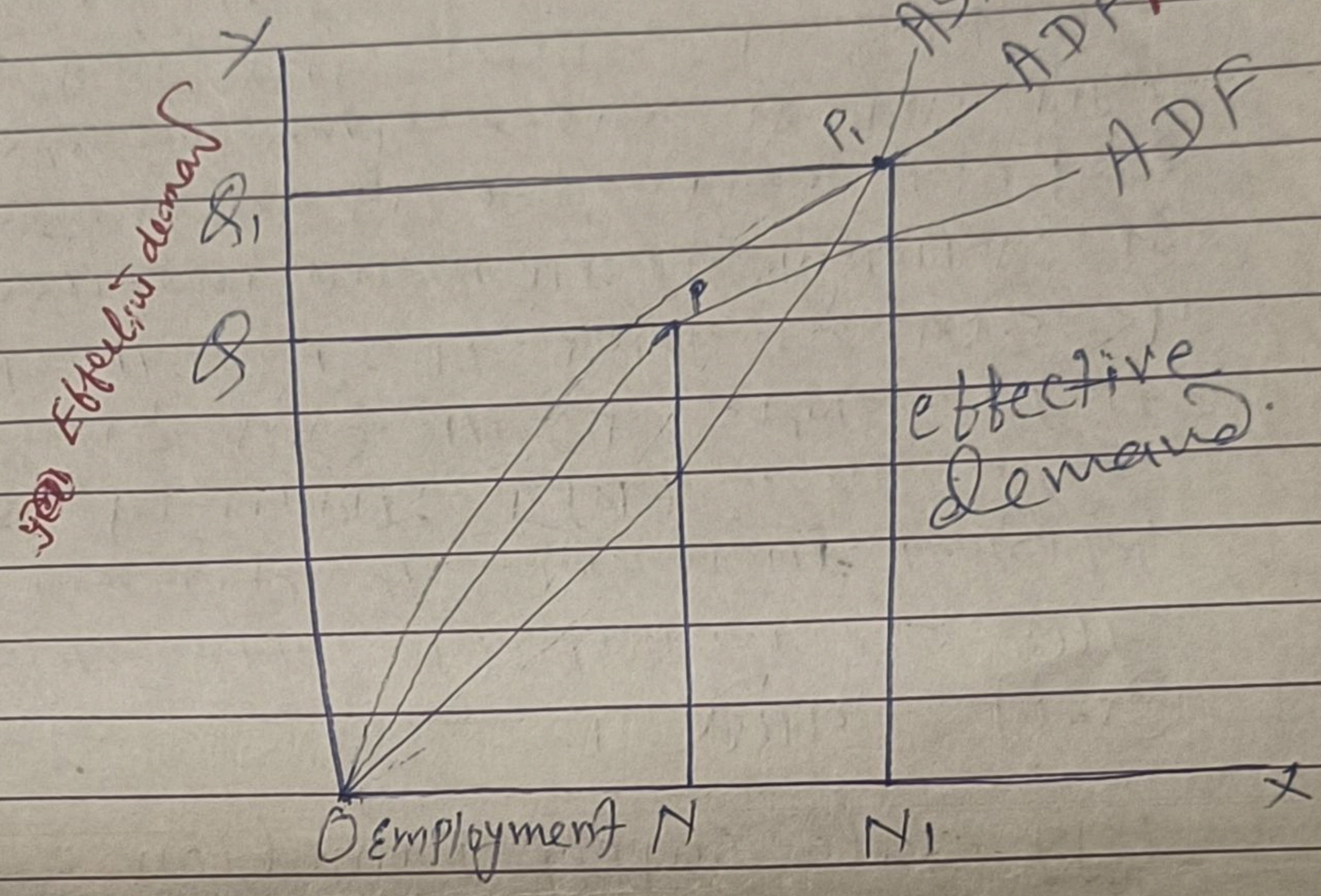

A.D.F समग्र माँग वक्र या कुल Receipts की मात्रा को बताता है, जो रोजगार के विभिन्न स्तरों पर वस्तुओं की बिक्री से प्राप्ति की प्रत्याशा रखता है। A.S.F समग्र-पूर्ति फलन या कुल लागत को बताता है। जितनी रोजगार के विभिन्न स्तरों पर साहसी को अवश्य प्राप्त होना चाहिए। ये दोनों वक्र एक-दूसरे को P बिन्दु पर काटता है। यही प्रभावशाली माँग का बिन्दु है। इस बिन्दु पर ADF = ASF या OQ = receipts = cost ON रोजगार की कुल मात्रा है। इसके किसी बिन्दु पर संतुलन नहीं होगा। ON से आगे बढ़ने पर लागत आगम से अधिक हो जाएगा। इससे नीचा रहने पर अधिकतम लाभ की प्राप्ति नहीं होगी। दोनों के अन्तर क्रिया के बिन्दु पर ही संतुलन की प्राप्ति होती है।

Keynes के विश्लेषण में यह